❍ 12 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗व्यर्थ बातें न बोली, न सुनी ?∗

➢➢ ∗अपकारी पर भी उपकार किया ?∗

➢➢ ∗शुधी की विधि द्वारा किले को मज़बूत बनाया ?∗

➢➢ ∗यथार्थ कर्म कर ख़ुशी और शक्ति की अनुभूति की ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अब सर्व ब्राह्मण बच्चों को यह स्पेशल अटेंशन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं, क्योंकि ∗आप सब ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर रहते हो। तो जो ऊंची टावर होती है, वह सकाश देती है, उससे लाइट माइट फैलाते हैं। तो रोज कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं परमात्म प्यारा रूहानी गुलाब हूँ"*

〰✧ सदा अपने को रूहानी रूहे गुलाब समझते हो? रूहानी रूहे गुलाब अर्थात् सदा रूहानियत की खुशबू से सम्पन्न आत्मा। *जो रूहे गुलाब होता है उसका काम है सदा खुशबू देना, खुशबू फैलाना। गुलाब का पुष्प जितना खुशबूदार होता है उतने कांटे भी होते हैं, लेकिन कांटों के प्रभाव में नहीं आता।* कभी कांटों के कारण गुलाब का पुष्प बिगड़ नहीं जाता है, सदा कायम रहता है। कांटे हैं लेकिन कांटों से न्यारा और सभी को प्यारा लगता है। स्वयं न्यारा है तब प्यारा लगता है।

〰✧ अगर खुद ही कांटों के प्रभाव में आ जाए तो उसे कोई हाथ भी नहीं लगायेगा। *तो रूहानी गुलाब की विशेषता है, किसी भी प्रकार के कांटे हों-छोटे हों या बड़े हों, हल्के हों या तेज हों-लेकिन हो सदा न्यारा और बाप का प्यारा।* प्यारा बनने के लिए क्या करना पड़े? न्यारापन प्यारा बनाता है।

〰✧अगर किसी भी प्रभाव में आ गये तो न बाप के प्यारे और न ब्राह्मण परिवार के। *अगर सच्चा प्यार प्राप्त करना है तो उसके लिए न्यारा बनो-सभी हद की बातों से, अपनी देह से भी न्यारा। जो अपनी देह से न्यारा बन सकता है वही सबसे न्यारा बन सकता है।* कई सोचते हैं-हमको इतना प्यार नहीं मिलता, जितना मिलना चाहिए। क्यों नहीं मिलता? क्योंकि न्यारे नहीं हैं। नहीं तो परमात्म-प्यार अखट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है।

लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है न्यारा बनना। विधि नहीं आती तो सिद्धि भी नहीं मिलती।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जो बहुत समय के स्नेही और सहयोगी रहते हैं उनको अंत में मदद जरूर मिलती है।* ऐसे अनुभव करेंगे जैसे स्थूल वस्त्र उतार रहे हैं। ऐसे ही शरीर छोड देंगे।

〰✧ *सारा दिन में चलते-चलते बीच-बीच में अशरीरी बनने का अभ्यास जरूर करो।* जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल का रिकार्ड बजता है तो वैसे वहाँ कार्य में रहते भी बीच-बीच में अपना प्रोग्राम आपे ही सेट करो तो लिंक जुटा रहेगा। इससे अभ्यास होता जाएगा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

˳̊̊ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

˳̊̊ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

˳̊̊ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *संगमयुग को नवयुग भी कह सकते हैं क्योंकि सब कुछ नया हो जाता है। बातें भी नई, मिलना भी नया, सब नया।* देखेंगे तो भी आत्मा, आत्मा को देखेंगे! पहले शरीरधारी शरीर को देखते थे अब आत्मा को देखते हैं। *पहले सम्पर्क में आते थे तो कई विकारी भावना से आते थे। अभी भाई-भाई की दृष्टि से सम्पर्क में आते हो।*

˳̊̊ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

˳̊̊ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप से लव रख अशरीरी बनने का पूरा अभ्यास करना"*

➳ _ ➳ प्रकृति के सानिध्य में, बेठी हुई मुझ आत्मा को... कलकल करते झरनो और कलरव करते पंछियो के मधुर गीत ने अपने प्रियतम की याद में डुबो दिया... मीठे बाबा के पास मेरे दिल के भाव जो पहंचे... तो पलक झपकते

बाबा मेरी नजरो के सम्मुख मौजूद हो गए... प्रेम से प्रेम मिल खिल गया और खुबसूरत समां बन गया... *आत्मा और परमात्मा दो दीवाने एक दूजे की दीवानगी में खो गए*... पूरी प्रकृति प्रेम तरंगो से सराबोर हो गयी... मै और बाबा दो प्रेमी संग प्रकर्ति का पत्ता पत्ता खिल उठा...

❈ *मीठे बाबा मुझ भाग्यशाली आत्मा को अपने आगोश में लेते हुए प्यार करते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... इस देह की दुनिया में सच्चे प्यार की आस, मात्र एक भ्रम है... सिवाय ईश्वरीय प्रेम के हर प्रेम झूठा है, विकारी है... *सिर्फ ईश्वर पिता की यादे ही सच्चे प्यार का पर्याय है.*.. इसलिए इन खुबसूरत यादो में गहरे डूब जाओ... अशरीरी बनने का अभ्यास हर पल बढ़ाओ..."

➢➣ _ ➢➣ *मै आत्मा ईश्वर प्रेम का अध्याय मीठे बाबा से यूँ सुनकर झूम उठी और बोली :-* " प्यारे बाबा मेरे... इस धरती पर सच्चे प्रेम के लिए ही तो मै आत्मा व्याकुल थी... *कल्प पहले मिले आपके प्रेम की ही तो सदा तलाश थी.*.. आज भाग्य ने जो आपसे मुझे पुनः मिलाया है... मै आत्मा अपने चमकते रूप को पाकर... ख़ुशी में बावरी होकर हर पल आपकी यादो में खोयी हूँ..."

❈ *मीठे बाबा मेरे दिल से आती प्रेम तरंगो को अपनी बाँहों में समेटते हुए बोले :-* "लाडले बच्चे... सदा सत्य की तलाश में ही तो दर दर भटके हो... *आज वह सत्य दिल के द्वार पर खड़ा बाहे फैलाये पुकार रहा.*.. फिर क्यों झूठ के आकर्षणों में समय और सांसो को खपाना... अपने आत्मिक स्वरूप में रहकर, अपनी अनन्त शक्तियो और गुणो के नशे में डूब जाओ..."

➢➣ _ ➢➣ *मै आत्मा अपने प्यारे भगवान को पिता रूप में पाकर अपने भाग्य पर नाज कर कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... *आपने जो ज्ञान धरोहर देकर मेरे जीवन को अमूल्य बनाया है.*.. उसके नशे में, मै आत्मा हर पल खोयी हुई हूँ... देह के भ्रम से निकल कर, आत्मिक आकर्षण में खो गयी हूँ... और आपके

प्रेम में डूबी हुई हूँ..."

❊ *मीठे बाबा अपनी शक्तियो को मुझ पर उंडेलते हुए बोले :-* "मीठे बच्चे... सच्चे पिता के सच्चे प्रेम मे खोकर जनमो के बिछड़ेपन को यादो से मिटाओ... *देह के नातो से बुद्धि निकाल सच्ची यादो में अथाह सुखो को पाओ.*... बिन्दु बन कर बिन्दु बाप की यादो में गहरे डूब जाओ..."

➹ _ ➹ *मै आत्मा अपने बाबा को मुझ आत्मा के कल्याण अर्थ... इस तरहा चिंतन में देख कहती हूँ :-* "दुलारे प्यारे मेरे मीठे बाबा... आपके प्रेम को तो मै आत्मा जनमो से तरस रही हूँ... आज जो भाग्य ने आपको दिलाया है... तो आपकी यादे ही जीवन की साँस है... बिना साँस के तो मेरा वजूद ही नही... *आपके प्रेम में जो सुख मुझ आत्मा ने पाया है वह अमूल्य है.*.. ऐसी मीठी रुहरिहानं प्यारे बाबा से करके, मै आत्मा स्थूल जग में आ गयी..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- जो रत्न बाप के मुख से निकलते हैं वही अपने मुख से निकालने हैं*"

➹ _ ➹ अविनाशी ज्ञान रत्नों से मुझ आत्मा का श्रृंगार करने वाले ज्ञान सागर *अपने प्यारे शिव प्रीतम से मिलने की जैसे ही मन में इच्छा जागृत होती है। वैसे ही मैं आत्मा सजनी ज्ञान रत्नों का सोलह श्रृंगार कर चल पड़ती हूँ ज्ञान के अखुट खजानो के सौदागर अपने शिव प्रीतम के पास*। उनके साथ अपने प्यार की रीत निभाने के लिए देह और देह के साथ जुड़े सर्व संबंधों को तोड़, निर्बंधन बन, ज्ञान की पालकी में बैठ मैं आत्मा मन बुद्धि की यात्रा करते हुए अब जा रही हूं उनके पास।

➳ _ ➳ उनका प्यार मुझे अपनी ओर खींच रहा है और उनके प्रेम की डोर में बंधी मैं बरबस उनकी ओर खिंचती चली जा रही हूँ। *उनके प्यार में अपनी सुध-बुध खो चुकी मैं आत्मा सजनी सेकंड में इस साकार वतन और सूक्ष्म वतन को पार कर पहुंच जाती हूं परमधाम अपने शिव साजन के पास*। ऐसा लग रहा है जैसे वह अपनी किरणों रूपी बाहें फैलाए मेरा ही इंतजार कर रहे हैं। उनके प्यार की किरणों रूपी बाहों में मैं समा जाती हूं। उनके निस्वार्थ और निश्छल प्यार से स्वयं को भरपूर कर, तृप्त होकर मैं आ जाती हूँ सूक्ष्म लोक।

➳ _ ➳ लाइट का फरिश्ता स्वरूप धारण कर मैं फ़रिशता पहुंच जाता हूं अव्यक्त बापदादा के सामने। अव्यक्त बापदादा की आवाज मेरे कानों में स्पष्ट सुनाई दे रही है। *बाबा कह रहे हैं, हे आत्मा सजनी आओ:- "ज्ञान रत्नों का श्रृंगार करने के लिए मेरे पास आओ"।* बाप दादा की आवाज सुनकर मैं फ़रिशता उनके पास पहुंचता हूं। बाबा अपने पास बिठाकर बड़ी प्यार भरी नजरों से मुझे निहारने लगते हैं और अपनी सर्व शक्तियों रूपी रंग बिरंगी किरणों से मुझे भरपूर करने लगते हैं।

➳ _ ➳ सर्वशक्तियों से मुझे भरपूर करके बाबा अब मुझे एक बहुत बड़े हॉल के पास ले आते हैं। जिसमें अमूल्य हीरे जवाहरात, मोती, रत्न आदि बिखरे पड़े हैं। किंतु उस पर कोई भी ताला चाबी नहीं है। उनकी चमक और सुंदरता को देखकर मैं आकर्षित होकर उस हॉल के बिल्कुल नजदीक पहुंच जाता हूं। *बाबा मुझे उस हॉल के अंदर ले जाते हैं और मुझसे कहते हैं:- "ये अविनाशी ज्ञान रत्न है। इन अविनाशी रत्नों का ही आपको श्रृंगार करना है"।* कितना लंबा समय अपने अविनाशी साथी से अलग रहे तो श्रृंगार करना ही भूल गए, अविनाशी खजानों से भी वंचित हो गए। किंतु अब बहुत काल के बाद जो सुंदर मेला हुआ है तो इस मेले से सेकेंड भी वंचित नहीं रहना।

➳ _ ➳ यह कहकर बाबा उन ज्ञान रत्नों से मुझे श्रृंगारने लगते हैं। *मेरे गले मे दिव्य गुणों का हार और हाथों में मर्यादाओं के कंगन पहना कर

बाबा मुझे सर्व ख़ज़ानों से भरपूर करने लगते है*। सुख, शांति, पवित्रता, शक्ति और गुणों से अब मैं फ़रिशता स्वयं को भरपूर अनुभव कर रहा हूँ। बाबा ने मुझे ज्ञान रत्नों के खजानों से मालामाल करके सम्पत्तिवान बना दिया है। सर्वगुणों और सर्वशक्तियों के श्रृंगार से सजा मेरा यह रूप देख कर बाबा खुशी से फूले नही समा रहे। बाबा जो मुझ से चाहते हैं, बाबा की उस आश को मैं आत्मा सजनी बाबा के नयनो में स्पष्ट देख रही हूं।

➽ _ ➽ मन ही मन अपने शिव प्रीतम से मैं वादा करती हूँ कि ज्ञान रत्नों के श्रृंगार से अब मैं आत्मा सदा सजी हुई रहूँगी और मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकालूंगी। *अपने शिव साथी से यह वादा करके अपनी फ़रिशता ड्रेस को उतार अब धीरे-धीरे मैं आत्मा वापिस इस देह में अवतरित हो गयी हूँ*। अब मैं बाबा से मिले सर्व ख़ज़ानों से स्वयं को सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ। जैसे मेरे अविनाशी साजन ने मुझ आत्मा को गुणों और शक्तियों के गहनों से सजाया है वैसे ही मैं आत्मा भी वरदानीमूर्त बन अब अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को अपने मुख से ज्ञान रत्नों का दान दे कर उन्हें भी परमात्म स्नेह और शक्तियों का अनुभव करवा रही हूं।

————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं शुद्धि की विधि द्वारा किले को मजबूत बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सदा विजयी आत्मा हूँ।*
✺ *मैं निर्विघ्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव यथार्थ कर्म का प्रत्यक्षफल प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव खुशी और शक्ति की प्राप्ति करती हूँ ।*
✺ *मैं प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ "आज बापदादा सर्व स्नेही और मिलन की भावना वाली श्रेष्ठ आत्माओं को देख रहे हैं। बच्चों की मिलन भावना का प्रत्यक्षफल बापदादा को भी इस समय देना ही है। भक्ति की भावना का फल डायरेक्ट सम्मुख मिलन का नहीं मिलता। लेकिन एक बार परिचय अर्थात् ज्ञान के आधार पर बाप और बच्चे का सम्बन्ध जुटा, तो ऐसे *ज्ञान स्वरूप बच्चों को अधिकार के आधार पर शुभ भावना, ज्ञान स्वरूप भावना, सम्बन्ध के आधार पर मिलन भावना का फल सम्मुख बाप को देना ही पड़ता है*। तो आज ऐसे ज्ञानवान मिलन की भावना स्वरूप आत्माओं से मिलने के लिए बापदादा बच्चों के बीच आये हुए हैं।

➳ _ ➳ *कई ब्राह्मण आत्मायें शक्ति स्वरूप बन, महावीर बन सदा विजयी आत्मा बनने में वा इतनी हिम्मत रखने में स्वयं को कमजोर भी समझती हैं लेकिन एक विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ गई हैं*। कौन-सी विशेषता? *सिर्फ बाप अच्छा लगता है*, श्रेष्ठ जीवन अच्छा लगता है।

ब्राह्मण परिवार का संगठन, नि:स्वार्थ स्नेह- मन को आकर्षित करता है। बस यही विशेषता है कि *बाबा मिला, परिवार मिला, पवित्र ठिकाना मिला, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज सहारा मिल गया*। *इसी आधार पर मिलन की भावना में स्नेह के सहारे में चलते जा रहे हैं*।

✷ *"ड्रिल :- स्वयं को विशेष आत्मा समझना।"*

➳ _ ➳ शुभभावनाओं की शाखाओं पर झूलता, स्नेह वात्सल्य के पलनों में पलता, मैं आत्मपंछी, मन बुद्धि की सुन्दर मणियों समान चमचमाती आँखों से इस देह रूपी पिंजरे को साक्षी भाव से देख रहा हूँ... *पाँच तत्वों से बना ये देह रूपी पिंजरा... इसमे रहने का लम्बा अभ्यास और इसकी छद्म् स्वर्ण मयी आभा मुझे लुभाती है, मगर दूर क्षितिज से आती और मेरे कानो में गुनगुनाती मीठी-सी मनुहार भी मुझे बुलाती है*... मिलन की भावना में स्नेह के सहारें, उमंग उत्साह के पंखो से चले आओं मेरे पास... मानों कोई पुकार रहा है... *आ जाओ लाडलों अब अव्यक्त है इशारें इन्तज़ार कर रहे है बाबा बाहें पसारे*...

➳ _ ➳ सप्तरंगों की इन्द्रधनुषी आभा से झिलमिलाती नन्हीं मणि के समान मैं आत्मा, उमंग उत्साह के पंखों से उडती जा रही हूँ परमधाम की ओर... और एक रूप होकर शिव पिता की गोद में समाँ गयी हूँ... *वो स्नेहमयी गोद, उनका वो दुलार, शुभ संकल्पों की माला बनकर सिज़रें की सभी रूहानी मणियों को शुभ भावों से भरपूर कर रहा है...* मैं आत्मा स्वयं को देर तक शान्ति प्रेम पवित्रता और शक्तियों से भरपूर करती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ *बारिश के बाद जैसे- भरपूर होकर बहता कोई झरना, झरने के नीचे भरपूर होकर झलकता कोई घट*... उसी तरह मेरे उर का घट भी छलक रहा है... छलछलाई उर में मधुशाला अंग अंग डूबा प्यार में, पाकर तेरी रहमते, खाक शेष इस संसार में... *ज्ञान स्वरूप बनकर, मैं अधिकारी बन, शुभभावना और सर्वसम्बन्धों का सुख पाती हुई, स्नेह मिलन का प्रत्यक्ष फल पा रही हूँ*... मिलन का ये सुख अनिर्वचनीय है... *न बता सकूँ न छुपा सकूँ कुछ-कुछ हालत मदहोशी की, अल्फ़ाज नहीं मिलते लबों को, और बोल रही है खामोशी भी...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा भरपूर होकर फरिश्ता रूप में बापदादा के संग विश्व सेवा पर... विश्व की सभी आत्माओं को मनसा सकाश दे रही हूँ... बापदादा के हाथों में मेरे दोनो हाथ... *मैं फरिश्ता महसूस कर रही हूँ उन हाथों की वरदानी शक्तियों को, जो मुझ फरिश्ते को शक्ति स्वरूप और महावीर बनने का वरदान दे रहे हैं*... बापदादा मुझे सदा विजयी बनने का तिलक लगा रहे हैं... *उनकी उँगलियों का वो स्नेहिल सा जादुई स्पर्श मैं देर तक अपनी भृकुटी पर महसूस कर रही हूँ... ये स्पर्श मुझे पल पल विशेष आत्मा होने का गहराई से एहसास करा रहा है* और मैं याद कर रही हूँ अपनी विशेषताओं को...

➳ _ ➳ सिर्फ एक बाप को पहचाना है मैंने, सिर्फ एक बाप अच्छा लगता है... और इसी एक सम्बन्ध से सब सम्बन्ध पा लिए है... *देखूँ आँचल को मैं अपने, ये सौगातो से भरपूर है, बन गयी मैं विशेष आत्मा ये तेरी रहमतों का नूर है... ये निशदिन स्नेह की बरसाते और सुख रूहानी रिश्तों का, मंजिले कदमों तले और संग मिला फरिश्तों का*...

➳ _ ➳ *बाबा मिला, परिवार मिला, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहारा मिल गया*... पाना था जो पा लिया के नशे में चूर मैं आत्मपंछी लौट आयी हूँ फिर से उसी देह में... *अब ये देह मेरे लिए पिंजरा नही है... ये विशेष साधन है संगम पर विशेष कमाई का*... साक्षी भाव से देखती हुई मैं विशेष आत्मा बैठ गयी हूँ पंच तत्वो के इस विशेष रथ पर... अपनी विशेष सेवाओ के निमित्त... अपनी विशेषताओं के नशे में चूर... *क्योंकि इस संगम पर मेरा अब हर पल विशेष है*... ओम शान्ति...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔